8

समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

19वीं शती के प्रारम्भ में ब्रिटिश राज (शासन) के प्रभाव के कारण भारतीय कला का ह्रास शुरू हो गया जो स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। दस्तकारी तथा भित्ति–चित्रों की तकनीक व लघु–चित्रकला जो कि कला के इतिहास में अद्वितीय मानी जाती थी, उनका लगभग लोप ही हो गया। लघु चित्रों को तो यूरोपियन तैलीय चित्रों ने समाप्त कर दिया। शती के अन्त होते–होते पारम्परिक भारतीय चित्रकला फीकी पड़ने लगी। यही समय था जब भारतीय कलाकारों ने अपनी पैत क कला को सकारात्मक सोच से देखना शुरू किया तथा यूरोपियन पूर्व ब्रिटिश राज के शासन की कला से आगे बढ़ने का प्रयास किया। केरल के **राजा रवि वर्मा** पौराणिक विषयों पर आधारित चित्रकला के लिए प्रसिद्ध थे। उनके तैलीय रंग के चित्रों पर पाश्चात्य कला का प्रभाव दिखाई देता था। दूसरी ओर **अबनींद्रनाथ टैगोर** ने अपनी चित्रकला में एक नई शैली का स जन किया। **नंदलाल बोस, विनोद बिहारी** तथा कुछ अन्य ने उनकी (टैगोर की) नई कला का अनुसरण किया जिसमें नवजाग ति व राष्ट्रीयता की भावना की प्रमुखता थी। इस प्रकार 20वीं शती के पहले आधे भाग में कला के क्षेत्र में बंगाल स्कूल की उत्पत्ति हुई। विषयों के चयन के लिए उन्होंने भारत की प्राचीन तथा पौराणिक कहानियों से प्रेरणा ली। इन कलाकारों ने पाश्चात्य यथार्थवाद को अस्वीकृत कर दिया और भारतीय कला के आदर्शवाद को प्राथमिकता दी। **जामिनी राय** ने अपनी कला में लोक कला को अपनाया। **रबीन्द्रनाथ टैगोर** ने अपनी चित्रकला में अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना को प्रस्तुत किया। इन कलाकारों ने भारतीय तथा चीनी शैली का अनुसरण करते हुए पारम्परिक पानी के रंगों तथा तकनीक के साथ प्रयोग किए। उन्होंने अपने प्रयोगों में लघुचित्रों, भित्तिचित्रों तथा लोककला से प्रेरणा ली। बाद में **अम ता शेरगिल** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने पाश्चात्य तथा भारतीय परम्पराओं को अपनाया। भारतीय आधुनिक कला के क्षेत्र में **अम ता शेरगिल** का योगदान अद्वितीय है। इस कला क्षेत्र में पहली महिला कलाकार होने का श्रेय **अम ता शेरगिल** को है। समकालीन भारतीय कला के इतिहास में इन सभी कलाकारों ने विशिष्ट कला कृतियाँ बनाईं।

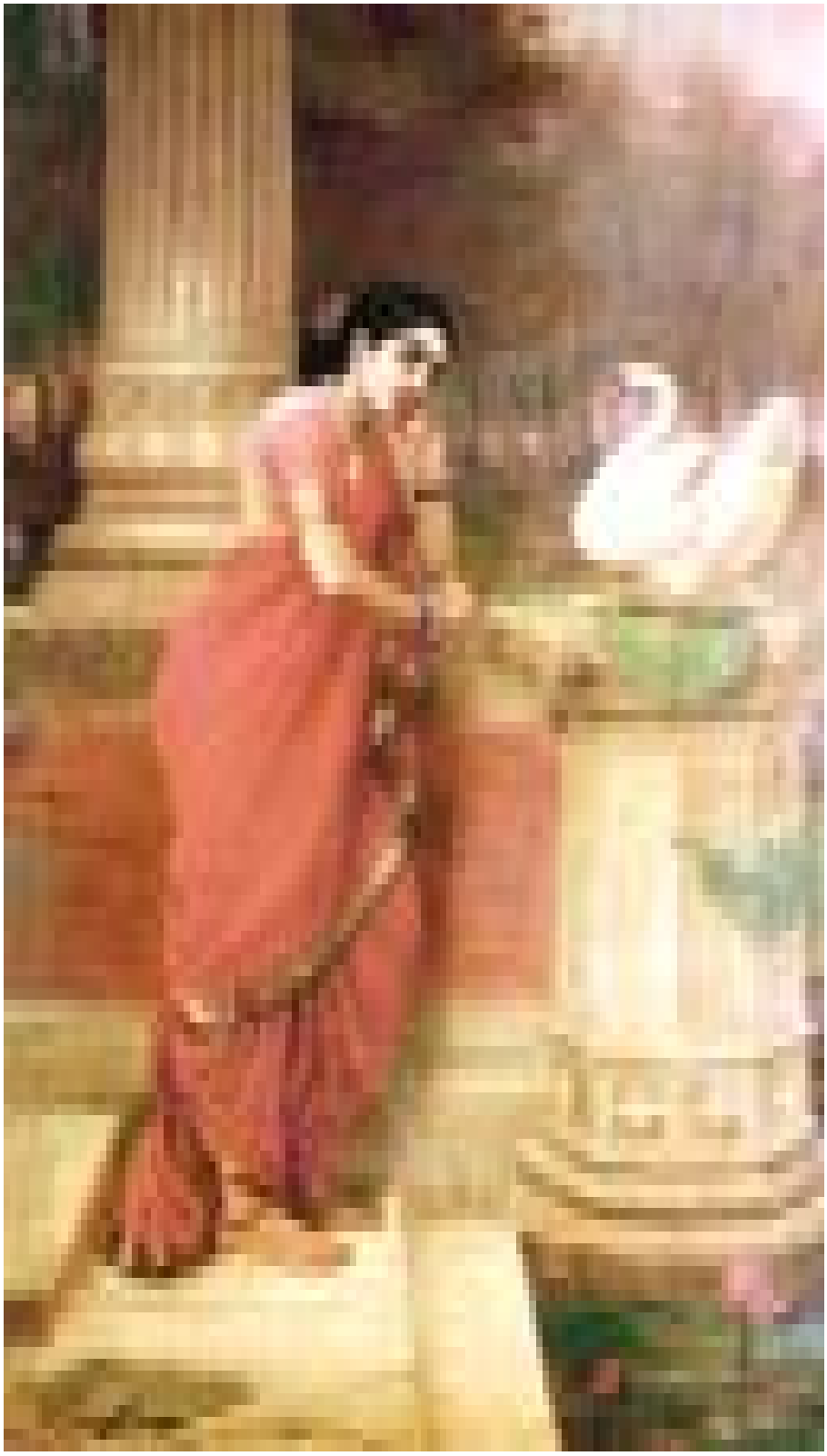

हंस दमयंती

उद्देश्य

इस पाठ के पढ़ने के बाद, आपः

- आधुनिक भारतीय कला के विकास सम्बन्धी आन्दोलनों का वर्णन कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों की विशेषताओं का वर्णन करके उनकी व्याख्या कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों के नाम, प्रयुक्त सामान, आकार, विषय–वस्तु तथा सम्बन्धित स्थानों को बता सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों के कलाकारों का नाम बता सकेंगे; और
- सूचीबद्ध कलाकारों की कलाकृतियों को पहचान सकेंगे।

हंस दमयंती (Hansa Damyanti)

शीर्षक	:	हंस दमयंती
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1899
कलाकार	:	राजा रवि वर्मा
संकलन	:	नई दिल्ली स्थित आधुनिक कला का राष्ट्रीय संग्रहालय (National Gallery of Modern Art, New Delhi)

सामान्य विवरण

राजा रवि वर्मा भारत के ख्याति प्राप्त कलाकारों में से एक हैं। केरल के छोटे–से गांव किलिमनूर में उनके जीवन का प्रारम्भ हुआ। एक कलाकार के रूप में **रवि वर्मा** की कल्पना द ष्टि भारतीय कला के इतिहास में एक क्रांतिकारी की थी। **रवि वर्मा** भारतीय कला के क्षेत्र में यूरोपीय विचारधारा वाले कलाकारों के प्रतिनिधि के रूप में उस समय के लोकप्रिय और विशिष्ट कलाकार थे। पानी तथा तैलीय रंगों की अपनी तकनीक के लिए **रवि वर्मा** ने खूब ख्याति अर्जित की। भारतीय पौराणिक कथाओं के विस्त त द श्यपटल पर पौराणिक कहानियों की नायिकाओं को चित्रित किया गया है। **रवि वर्मा** की कृतियों की समस्त श ंखला में पौराणिक नायिकाएँ ही प्रमुख हैं, जो **रवि वर्मा** की कृतियों की विशेषताएँ हैं। **रवि वर्मा** के चित्रों में भारतीय देवी–देवताओं के चित्र विभिन्न घरों तथा तीर्थ मन्दिरों में अभी भी विद्यमान हैं। उनके ये चित्र मुद्रित चित्रों में, कलैन्डरों में, पोस्टरों में तथा अन्य प्रख्यात कलाओं तथा रंगीन शिलामुद्रों पर अंकित/चित्रित हैं। **दुष्यन्त–शकुन्तला**, **नल-दमयन्ती की कथाओं** तथा **महाभारत महाकाव्य** से लिए गए विभिन्न प्रसंग **रवि वर्मा** की कलाकृतियों में विशेष स्थान रखते हैं।

हंस दमयंती (Hansa Damyanti) **राजा रवि वर्मा** की सबसे अधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है। इसे 1899 में तैलीय रंगों से बनाया गया था और जब इसे मद्रास (आजकल चैन्नई) फाइन आर्ट प्रदर्शनी में पहली बार दिखाया गया तो एक सनसनी फैल गई। इस चित्र में **रवि वर्मा** की पाश्चात्य तकनीक का सफल प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। यूरोपीय शैली के चित्रों में जो सशक्त अभिव्यक्ति होती थी, उसका आकर्षण ही **रवि वर्मा** की चित्रकला में रूढ़ भारतीय कला के विरोध स्वरूप परिलक्षित होता है।

रवि वर्मा के द्वारा चित्रित सभी आकर्षक और सुडौल स्त्रियों में **दमयंती** को सबसे

ब्रह्मचारीज

टिप्पणी

खूबसूरत स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। चित्र में **दमयंती** लाल रंग की साड़ी पहने हुए है तथा वह अपने प्रेमी **नल** का सन्देश सुन रही है। ये संदेश हंस के माध्यम से सुनाए गए हैं। हंस **नल** के बारे में बताता है तथा **दमयंती** के प्रति उसके प्रेम का बखान करता है। **दमयन्ती** की मौन प्रेम भावना उसकी आंखों की चमक तथा गालों की कांति से अभिव्यक्त हो रही है। उसका रूप कोमल, गरिमापूर्ण तथा सुन्दर है जिसके कारण वह बहुत आकर्षक लग रही है।

रवि वर्मा ने जो विषय चुना है, उसी के अनुरूप **दमयंती** की खड़ी आकृति और उसकी अर्थगर्भित भाव–भंगिमा है। पाश्चात्य कला के प्रभाव में आकर **रवि वर्मा** ने इस चित्र में तैलीय रंगों का प्रयोग किया है। रंगों के मिश्रण की कला की इस तकनीक में **रवि वर्मा** ने अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया है।

रवि वर्मा ने पारंपरिक भारतीय कला और समकालीन तंजावुर विचारधारा तथा पाश्चात्य शास्त्रीय यथार्थवाद के बीच एक कड़ी प्रदान की है। **रवि वर्मा** भारत के केवल एक महान कलाकार ही नहीं हैं, वे एक देशभक्त भी हैं। **राजा रवि वर्मा** का देहावसान 2 अक्टूबर 1906 को हुआ।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. **हंस दमयंती** का माध्यम क्या है?
2. चित्र में क्या दर्शाया गया है?
3. **रवि वर्मा** ने कौन–सी कड़ी जोड़ी है?
4. अपनी कला को प्रस्तुत करने में **रवि वर्मा** ने किन तरीकों को अपनाया?

ब्रह्मचारीज (Brahmcharies)

शीर्षक	:	ब्रह्मचारीज (Brahmacharies)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1938
कलाकार	:	अम ता शेरगिल
संकलन	:	नई दिल्ली स्थित आधुनिक कला का राष्ट्रीय संग्रहालय (National Gallery of Modern Art, New Delhi)

सामान्य विवरण

20वीं शती में भारत में समकालीन कला क्षेत्र में **अम ता शेरगिल** की उपस्थिति एक महान घटना मानी जाती है। उनके पिता का नाम सरदार उमराव सिंह शेरगिल था तथा माँ हंगरी की नागरिक लेडी अंतोइनेट थीं। **अम ता** ने अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्ष यूरोप में गुजारे तथा पेरिस में उच्च स्तरीय कला की सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त की। उत्तर प्रभाववादी कलाकारों से वह बहुत प्रभावित थीं। उन कलाकारों में **मोदीग्लियानी** (Modigliani) तथा

गौगिन (Gauguin) शामिल थे। वह 1921 में भारत आईं। वह अजन्ता के भित्ति चित्रों तथा कांगड़ा के उत्कृष्ट लघुचित्रों से बहुत प्रभावित हुईं तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त की। पात्रों के चेहरे पर जो भाव प्रदर्शित किए वे **अमृता** के अपने निजी अन्वेषण तथा प्रयोग थे। **अमृता** की कलाकृतियाँ आसपास केवल प्रतिरूप ही नहीं है। उन कृतियों में उनका सूक्ष्म दर्शन झलकता है और उनके प्रस्तुतीकरण में रंगों, आकार तथा भावनाओं का अपूर्व संयोजन है। दक्षिण भारत के दौरे से उन्होंने बड़ी प्रेरणा प्राप्त की जिसके फलस्वरूप उन्होंने **'दुल्हन का शृंगार'** (The Bride's Toilette) नामक चित्र बनाया। इसी प्रकार **'ब्रह्मचारी'** (The Brahmcharies) तथा **'बाजार जाते हुए दक्षिण भारतीय ग्रामीण'** (South Indian Villagers going to market) नामक चित्रों की रचना की।

अमृता शेरगिल ने **दि ब्रह्मचारीज** (The Brahmacharies) को 1938 में बनाया। यह चित्र **अमृता** की परंपरावादी दक्षिण भारत में अभी भी प्रचलित हिन्दू प्रथाओं तथा विश्वास/आस्थाओं की समझ का एक सुंदर उदाहरण है। इस चित्र में पांच पुरुष आकृतियाँ दिखाई गई हैं। **अमृता** ने एक आश्रम में कुछ ब्रह्मचारी विद्यार्थियों को देखा। उन्होंने उन ब्राह्मण विद्यार्थियों की सहजता को देखकर अपने चित्र में चित्रित किया जिसके पीछे उन ब्रह्मचारी विद्यार्थियों की हिन्दू आस्थाओं पर पूर्ण विश्वास चित्रित किया गया है। इस चित्र को समतल धरातल पर सीधे खड़े रूप में चित्रित किया गया है। शरीर के विभिन्न रंगों को काफी महत्व दिया गया है। गहरे लाल रंग की पृष्ठभूमि, सफेद धोतियां, हरा और भूरा–सा तटस्थ अग्रभाग इस संपूर्ण संयोजन की प्रशांतता में कोई व्यवधान पैदा नहीं करते हैं।

धोतियों के सफेद रंगों में विविधता है। यद्यपि रंग भिन्न हैं परन्तु इनकी भिन्नता इतनी सूक्ष्म है कि एकरूपता का अहसास होता है। चित्र के मध्य भाग में जो श्वेताभ आकृति है उसके चारों ओर काले और भूरे रंग के शरीर हैं। गहरी लाल पृष्ठभूमि को बड़ी सावधानी से बनाया गया है।

सात वर्षों के अंदर बनाए गए अपने चित्रों के कारण **अमृता** को याद किया जाता है। लेकिन जिस मनोयोग से **अमृता** ने अपनी प्रतिभा, रंग तथा ब्रश का प्रयोग किया, वह प्रशंसनीय है। पश्चिम में अपने प्रशिक्षण तथा पूर्व के विचारों के सामंजस्य ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। कला के विषयों के प्रति उनकी ईमानदारी तथा रंगों के प्रयोग ने अमृता के चित्रों को शाश्वत बना दिया है। अधिकांश चित्र उनके देश–प्रेम तथा मुख्य रूप से देश के निवासियों की जीवन शैली को प्रदर्शित करते हैं। अपने समकालीन चित्रकारों में **अमृता** सबसे युवा चित्रकार थीं। उनका जीवन भी बहुत अल्पकालीन रहा।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. **अमृता** को किस यूरोपीय शैली ने सर्वाधिक प्रभावित किया?
2. **ब्रह्मचारीज** (Brahmacharies) नामक चित्र में कितनी आकृतियाँ हैं?
3. **ब्रह्मचारीज** (Brahmacharies) नामक चित्र की क्या विशेषताएँ हैं?
4. यह चित्र किस वर्ष में चित्रित किया गया?

दि अट्रियम

दि अट्रियम (The Atrium)

शीर्षक	:	दि अट्रियम (The Atrium)
माध्यम	:	कागज पर पानी के रंग
समय	:	1920
आकार	:	12.5 x 9.5 इंच
कलाकार	:	गगनेंद्रनाथ टैगोर
संकलन	:	रवीन्द्र भारती सोसाइटी, जोरासन्को, कोलकाता

सामान्य विवरण

गगनेंद्रनाथ टैगोर का जन्म 1867 में कोलकत्ता के टैगोर परिवार में हुआ। अपने समकालीन भारतीय चित्रकारों के मध्य उनका एक अग्रणी स्थान था। 1910 से 1921 के दौरान **टैगोर** की प्रमुख कृतियों में हिमालय पर्वत श्रंखलाओं के चित्र, कला–क्रम में चैतन्य की जीवनगाथा तथा भारतीय जीवन को दर्शाते हुए चित्र हैं। एक तरफ उन्होंने अपने भाई **अबनींद्रनाथ** (Abanindranath) की कला का समर्थन किया तो दूसरी ओर यूरोप की घनवादी विचारधारा की ओर अपने रूझान को भी प्रदर्शित किया। बाद में अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी एक स्पष्ट शैली बना ली तथा अपनी छाप के घनवाद को विकसित किया। उसके अनुसार घनवाद का मूल उद्देश्य अभिव्यक्ति को गूढ़ ज्यामितीय आकारों के माध्यम से अभिव्यक्त करना था। काफी लम्बे प्रयोगों के बाद उन्होंने अपनी तकनीक विकसित की। **गगनेंद्रनाथ** ने समतल ज्यामितीय छाया आकारों को रंगों द्वारा आच्छादित करके रहस्यमय बनाया। वह निश्चय ही सुन्दर संयोजन के विशेषज्ञ (गुरु) हैं। अपने कला चित्रों में हलके रंग तथा छाया के माध्यम से ज्यामितीय आकारों तथा सरल आकारों को आकार देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कभी भी पाश्चात्य कलाशैली का अन्धानुकरण नहीं किया। वह अपने समय के एक महान कला समीक्षक भी रहे तथा उनके कार्टून (व्यंग्य चित्र) भी बहुत चर्चित थे। अपने व्यंग्य चित्रों के माध्यम से उसने कोलकाता के विभिन्न द श्यों को दिखलाया तथा कोलकातावासियों के मनोरंजन और विनोदी जीवन को भी चित्रित किया। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित बंगालियों पर किए गए व्यंग्यों के लिए भी उनके व्यंग्यचित्र बहुचर्चित हैं।

गगनेंद्रनाथ टैगोर के चित्रों में से एक चित्र **दि अट्रियम** (The Atrium) असाधारण कला कृति है जो उनकी कृतियों पर घनवाद के प्रभाव का नमूना है। कला के क्षेत्र में घनवाद एक ऐसी शैली है जिसमें वर्णित वस्तुओं को ज्यामितीय आकार में संयोजित कर प्रस्तुत किया जाता है। उन्होंने अपने चित्रों में यही शैली अपनाई। एक घनवादी कलाकार की भांति इन ज्यामितीय आकारों से ही अपनी कृतियां बनाई। इस चित्र में रंगों के माध्यम से प्रकाश एवं छाया के अपूर्व संयोजन के प्रयोग से हुए प्रभाव को दर्शाया है। यद्यपि

टिप्पणी

गगनेंद्रनाथ ने अपनी प्रारम्भिक कृतियों में बहुत–से रंगों का प्रयोग किया परन्तु इस चित्र में विभिन्न छाया तथा रंगों का प्रयोग किया है। यद्यपि ये आकृतियाँ अमूर्त हैं, तथापि चित्र को समझना आसान है। उस समय के किसी भी कलाकार ने इस पाश्चात्य अवधारणा पर प्रयोग नहीं किया।

गगनेन्द्रनाथ टैगोर को आज भी एक ऐसे कलाकार के रूप में जाना जाता है जिन्होंने कई प्रयोग किए। 1938 में उनका देहावसान हुआ। अपने चित्रों तथा व्यंग्य चित्रों के द्वारा वह अभी भी जिन्दा हैं।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. 1910 से 1921 तक **गगनेन्द्रनाथ** ने किन विषयों को चुना?
2. उनके चित्र **दि अट्रियम** (The Atrium) में किस यूरोपीय शैली का प्रभाव दिखाई देता है?
3. **गगनेंद्रनाथ** व्यंग्य चित्रों में किस पर व्यंग्य साधा गया है?
4. **दि अट्रियम** (Atrium) बनाने में किस माध्यम को चुना गया है?

आपने क्या सीखा

आधुनिक भारतीय कला देश के इतिहास तथा सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित है। कलाकारों ने इन परिस्थितियों में अपनी शैली का विकास किया। ब्रिटिश राज के पतन के बाद विभिन्न विचारधाराओं का विकास हुआ। कंपनी (Company) विचाराधारा के अंतर्गत ब्रिटिश युग में विभिन्न कलाकृतियाँ देखने को मिली। भारतीय कलाकारों (चित्रकारों) ने अपने चित्रों में यूरोपीय तकनीक का प्रयोग किया।

चित्रकार **राजा रवि वर्मा** ने भारतीय विषयों को पुनः क्रियाशील करने के लिए प्रयास किए और इसमें उन्होंने पाश्चात्य शैली का अनुसरण किया। बाद में शान्तिनिकेतन में बंगाल विचार मंच की स्थापना हुई जो कला के विकास का केन्द्र बना। भारतीय कला को एक नई दिशा देने के उद्देश्य से विभिन्न प ष्ठभूमि के कलाकार एकत्रित हुए। उन कलाकारों ने या तो पाश्चात्य शैली का अनुसरण किया या फिर पूर्वी तकनीक का प्रयोग किया, परन्तु वे सब लोग अपनी निजी शैली को प्रक्षेपित करने में सफल हुए।

अबनीन्द्रनाथ टैगोर तथा उसके अनुयायियों का योगदान बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है। भारतीय कला के इतिहास में **नन्दलाल बोस, जामिनी राय, डी.पी. रॉय चौधरी** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने अपनी कला की छाप छोड़ी। बंगाल परंपरा (Bengal School) ने समकालीन कला में गति देने में प्रारम्भिक योगदान दिया। सम्भवतः **अमृता शेरगिल** इस युग में सर्वोत्तम कलाकार थीं। यद्यपि वह किसी विशेष भारतीय विचारधारा से सम्बद्ध नहीं थी, फिर भी उन्होंने सात वर्ष के छोटे–से समय में काफी अधिक असाधारण चित्र बनाए। तकनीक तथा विषयों का चयन एवं अपने चित्रों के

माध्यम से भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करने की उनकी तीव्र इच्छा आने वाली पीढ़ी ने समझी और उसका स्वागत किया।

पाठांत अभ्यास

1. भारत में कंपनी कला (Company Art) के पतन के बाद किस प्रकार की कला पनपी? संक्षेप में लिखिए।
2. **राजा रवि वर्मा** के चित्रों के विषयों का वर्णन कीजिए।
3. **ब्रह्मचारीज** नामक चित्र के संयोजन का वर्णन कीजिए।
4. **गगनेन्द्रनाथ टैगोर** की चित्रकला शैली के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. कैनवास पर तैलीय चित्र
2. नल द्वारा दिया गया सन्देश दमयंती सुन रही है।
3. पारम्परिक भारतीय कला तथा पाश्चात्य यथार्थवाद के बीच।
4. रंगीन शिलामुद्रा (Oleograph)

8.2

1. उत्तर प्रभाववादी
2. पांच
3. समतल तथा ऊर्ध्वाधर परिस्थितियों में उभरते आकार
4. 1938

8.3

1. हिमालय के रेखा चित्र तथा चैतन्य का जीवन
2. घनवाद
3. कोलकाता के द श्य तथा वहाँ के निवासियों के व्यंग्यात्मक चित्र
4. पानी के रंग या कागज